जून 2019 | मूल्य :20/-

डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2018-2020

पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

संस्कार सागर

वर्ष :21 | अंक : 242

संस्कार सागर पढ़िये * संस्कार गढ़िये * संस्कार सागर के सदस्य बनिए

नवागढ़ (नंदपुर) पाषाण युग का एक सांस्कृति क्षेत्र

* प्रो. गिरिराज कुमार, आगरा *

नवागढ़ जिसको नंदपुर के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन सभ्यता का स्थल है। यह उत्तरप्रदेश के महरौनी तहसील जिला ललितपुर में मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के सीमा पर 78.80° देशान्तर एवं 24.34° अक्षांश में स्थित है। यह मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ से 30 कि.मी. झांसी (उ.प्र.) से 130 कि.मी. तथा ललितपुर उ.प्र. से 65 कि.मी. पर अवस्थित है। बुंदेलखण्ड़ जो खजुराहो तथा ओरछा के मंदिरों के लिये विश्वप्रसिद्ध है, का एक हिस्सा है, जिसकी स्थापना गुप्तकालीन शासकों ने की थी।

श्री जयकुमार निशांत जो नवागढ़ के जैन मंदिर के प्रमुख कार्यकर्ता हैं, इन्होंने नवागढ़ की फाइटोन पहाड़ी के पास जैन पहाड़ी में कुछ शैलाश्रय एवं पाषाण चित्र खोजे हैं। उन्होंने कुछ मन के तथा अन्य पुरातत्व सामग्री जो प्राचीन रहवासी प्रयोग करते थे खोजी है। उनकी बहुत तीव्र रूचि इस क्षेत्र का सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक इतिहास जानने और उसको प्रमाणित करने की है, यही कारण है कि वे चाहते हैं कि पाषाण कला एवं अन्य स्थलों का पाषाण कला विशेषज्ञों के द्वारा अवलोकन एवं अध्ययन करया जाये। इस हेतु उन्होंने मुझे इस क्षेत्र आमंत्रित किया। उनके आमंत्रण पर मैं तथा डॉ. अभिमन्यु जो संस्कृत व्याकरण के सहायक प्रोफेसर हैं, 28 जनवरी 2019 को क्षेत्र पर पहुंचे और स्थान एवं क्षेत्र का अवलोकन अन्वेषण किया।

यहां पर पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प के द्वारा खोजा गया दसवीं शताब्दी का एक जैन मंदिर है। जिसका जीर्णोद्धार जैन ट्रस्ट के द्वारा स्थानीय लोगों की सहयता से ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत जो पं. गुलाबचन्द्र पुष्प के पुत्र हैं, के कुशल निर्देशन में किया गया। वर्तमान में यह सुन्दर मंदिर जीवन्त कृति है और लोगों के द्वारा पूजित-अर्चित है।

नवागढ़ ग्रेनाइट संरचित क्षेत्र है। यहां पहाड़ी के ऊपर प्राचीन रहवासियों के साधन के कुछ अवशेष प्राप्त होते हैं , पहाड़ी गांव के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहां से कुछ बर्तनों के अवशेष प्राप्त होते हैं , पहाड़ी गांव के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहां से कुछ बर्तनों के अवशेष तथा प्राचीन दुर्लभ सामान यथा मिट्टी तथा पाषाण के मन के, धातु उपकरण आदि प्राप्त हुये हैं ।

मंदिर के पश्चिम में 1.5 किमी. की दूरी पर एक ग्रेनाईट की पहाड़ी है जिसको सिद्धों की टोरिया कहा जाता है। यहां पर ग्रेनाइट की एक विशाल चट्टान है जो उपर से नीचे तक दो भागों में दरार के द्वारा विभाजित है। उस पर एक कप मार्क बना है जो लगभग वृत्ताकार है। यह चट्टान लगभग 8.6×6×3.5 मीटर लम्बी, चौड़ी ऊंची है। इस चट्टान के क्वार्ट्स क्रिष्टल की संरचना 1.2-0.4 मि.मी. तक है। चट्टान पर एक पैट्रोलिक कप मार्क के रूप में बना है, जिसका माप 60×66×26.5 मिली मीटर है। क्षरण के कारण यह जानना संभव नहीं हो पाया कि किसी तकनीक से इसका निर्माण किया गया था। यह प्रत्यक्ष दबाब (ठोककर) तकनीक के द्वारा या धातु की छैनी का प्रयोग कर बनाया गया। यह सुनिश्चित नहीं हो पाया है। फिर भी इसकी सतह को देखकर लगता हे कि इसमें गतिज ऊर्जा का स्थानान्तरण हुआ था, जिसका वर्तमान में कुछ

अवशेष मात्र है। बाकी क्षरण के कारण समाप्त हो गया हैं। यह एक मात्र कप मार्क है। जिसे हम लोगों ने इस क्षेत्र पर पाया है। लेकिन हम ऐसे और अवशेषों की आशा करते हैं अतः इस क्षेत्र पर गहन खोज होनी चाहिये। जिससे ऐसे अनेक अवशेष प्राप्त हो सकें।

पाषाण चित्र- एक अन्य पहाड़ी है जिसे फाइटोन हिल्स कहा जाता है। यहां पांच चट्टानें (फाइव स्टोन) अवस्थित हैं। इसी कारण इसे फाइटोन कहा जाता है। यह स्थल नवागढ़ गांव से पश्चिम में लगभग 3 किमी. पर स्थित है। यहां पर एक पाषाण गुफा (राक शैल्टर) में कुछ पाषाण चित्र एक बड़ी ग्रेनाइट चट्टान पर मिले हैं। गुफा 3.3 मी. लम्बी, 3 मीटर गहरी एवं 1.55 मीटर ऊँची है। इसमें स्पष्ट रूप से दिखने वाले कुछ जानवरो के चित्र, ज्यामितिक आकृतियां बनी हैं, जो पूर्व पाषाण (माइक्रोलिथिक/मैसोलिथिक) काल के जंगली पशु 6 से 10 हजार वर्ष प्राचीन हैं। इनका संरक्षण आवश्यक है। एक व्यक्ति ने अपना नाम वीर गुर्जर गहरे और मोटे अक्षरों से सफेद खडिया से लिखा है।

संरचना संख्या -1

इसमें एक जंगली पशु जो बाइसन (जंगली भैंसा/ जंगली बैल सांड) जैसा दिखता है। दाहिने तरफ तीन ज्यामितिक आकृतियां बनी हैं, जो इसके सामने हैं, तथा एक के ऊपर एक हैं। बाइसन 16.5 × 17 सेमी. नाप का है तथा इसका शरीर खड़ी बहु रेखाओं द्वारा सज्जित है तथा सींग पूर्ण विकसित एवं मुड़े हुए हैं। इसके सामने एक ज्यामितिक रचना है जो कम तिरछी रेखाओं द्वारा भरी हुई है। इसके बाद दो आयताकार खंड हैं। इस रचना का नाप 50 ×44 सेमी. है जो एक शैल्टर की दाहिनी दीवाल पर बना हुआ है। ये चित्र लाल रंग से महीन ब्रश के द्वारा बनाये गये हैं। इसके ऊपर गेरूआ रंग से मोटे ब्रश द्वारा जो एक रेखा के अवशेष हैं। इसके बगल में गहरे लाल रंग से बने तीन चिन्ह हैं शायद बाद में बनाये गये हैं। एक वर्गाकार चित्र बना है। चट्टान की सतह उखड़ने के कारण इस चित्र का कुछ दाहिना हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया है।

यह चित्र लवण की सफेद परत से ढक रहा है। इसके अलावा लाल रंग से बना एक जानवर का रेखाचित्र है, क्षरण के कारण इसका रंग हल्का पड़ गया है। यह महीन ब्रश से बना है। इन रचनाओं से यह स्पष्ट झलकता है कि ये चित्र तीन चरणों में बनाये गये हैं। जिनमें से दो जानवरों की पूर्वकालिक पाषाण युग की तथा तीसरी बाद के काल की है।

संरचना संख्या 2

शेल्टर की दीवाल के बायें तरफ 7 टेड़ी-मेड़ी रेखायें है जो कि मध्यम चौडाई के ब्रश द्वारा लाल रंग से एक के ऊपर एक बनाई गई हैं। यह रचना 20×17 से.मी. की है। इसके अतिरिक्त दो ज्यामितिक आकृतियां महीन ब्रश से लाल रंग से बनाई गई हैं। बायें तरफ की आकृति जो 11×10 सेमी. है लगभग वृत्ताकार है और एक केन्द्र वाले दो वृत्तों के बीच के स्थान का सीधी रेखाओं द्वारा सुसज्जित किया गया है। बायी ओर की 16×12 सेमी. की आकृति को आड़ी रेखाओं द्वारा दो भागों में बांटा गया है, नीचे का हिस्सा अपेक्षाकृत बड़ा है और वह 6 अर्थ चन्द्राकार वाली मुडी रेखाओं द्वारा सज्जित किया गया है। ऊपरी हिस्सा 9 रेखाओं द्वारा असमान भाग में विभाजित है। यह आकृतियां मोटे सफेद रंग की परत से आवरित है। इसके सिवा रॉक शेल्टर की छत पर उखड़े लाल रंगी की पूर्व आकृतियों की अवशेष हैं।

जैन साधु की पाषाणाकृति-

पाषाण की एक सकरी गुफा में दीवाल पर जैन साधु की आकृति उकेरी हुई है। इस गुफा में हम घुटनों के बल चलकर अंदर पहुंचे। संभवतः यह स्थान जैन साधुओं के द्वारा ध्यान और प्रार्थना के लिये उपयोग में आता होगा तथा किसी ने यह चित्र उकेर दिया होगा। यह 50 सेमी. ऊंचा और 25 सेमी. चौड़ा है। इसके दाहिने हाथ में कोई वस्तु है जो स्पष्ट नहीं दिखती थी।

पाषाण की कुल्हाड़ी

लगभग 500 मीटर गांव के पश्चिम में स्थित पहाड़ी की ढलान पर चर्ट पर बनीं एक छोटी हेण्ड एक्स मिली है। यह अच्छी तरह निर्मित है और इसका बेंट 120डिग्री पर बना है जिसका कुछ हिस्सा उखड़ गया है, सिरा टूट गया है किनारे टेड़े-मेड़े हो गये हैं क्योंकि आगे-पीछे दोनों तरफ की 5-5 पर्ते उखड़ गई हैं। किनारो की रिटचिंग दोनों तरफ से की गई है। इसका रंग हल्का पीला है।

द्वितीय अन्वेषण

दिनांक 27-28 मार्च 2018 को नवागढ़ आकर मैंने पूरे क्षेत्र का विधिवत निरीक्षण किया। यहां मुडी टौरिया, बंगाज टौरिया, पनियारा नाला के आसपास निरीक्षण करने पर छोटी हैन्डेक्स 53.8×39×15 मि.मी. पेटीनेटिड चर्ट 38.3×26.0×10 मि.मी. की तिकोनी आकृति एवं 31.5×23.0×6.4 मि.मी. की फलैक आन चर्ट का अन्वेषण किया।

तृतीया अन्वेषण

5 से 7 जुलाई 2018 को नवागढ़ में मुंडी टौरिया, नवागढ़ से 3 किमी. मैनवार टौरिया तथा नवागढ़ से 7 किमी. सपौन टौरिया का निरीक्षण किया। जिसमें मुंडी टौरिया के दक्षिणी भाग में ग्राम वासियों द्वारा उसकी मिट्टी (गुरम) खोदने से लगभग 7 फुट गहराई का स्थान मिला जिसमें लोवर पोलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) एवं मिडिल पेलियोलिथिक (35 हजार से 2 लाख वर्ष) के कई पाषाण उपकरण प्राप्त हुई। जिनकी आकृति 61×73.8×46.85 मिमी., 70×67×26.6 मिमी. है।

सापौन टौरिया, जो माननीय उमाभारती जी के निवास ग्राम डूंडा से 4 किमी. एवं अजनौर से 4 किमी. रोड़ पर स्थित है यहां क्वार्टज की 200 मीटर लम्बी 50 मीटर ऊंची पहाडी है जिसमें क्वार्टज के कई उपकरण प्राप्त हुई जिनकी आकृति 87×81.7×45 मिमी. 70.6×55×25 मि.मी. एवं 130.5×61×39 मि.मी. है। इसी प्रकार मैनवार हिल्स से भी कई उपकरण प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार नवागढ़ क्षेत्र की प्रागैतिहासिक विरासत के साक्ष्य लोअर पेलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) से अपर पेलियोलिथिक तक प्राप्त हुए हैं, नवागढ़ की एक और विशेषता है कि यहां पाषाण काल के साक्ष्यों के साथ कपमार्क, रॉक पेंटिग्स, रॉक कट इमेज भी मिले हैं।

हजारों वर्ष प्राचीन शैलाश्रयों में जैन संतों के साधना स्थल एवं शयनस्थल यह सिद्ध करते हैं कि नवागढ़ की पहाड़ियों में जैन संतों का आवागमन हजारों वर्षों से निरंतर हो रहा है। यहां प्राप्त मिट्टी एवं पाषाण के मन के यहां विकसित मानव संस्कृति के साक्ष्य हैं। कला शिल्पानुसार यहां यहां गुप्त काल, प्रतिहार काल, चन्देल काल से वर्तमान काल तक के प्रमाण स्पष्ट रूपेण संगृहीत हैं। यहां की पुरातात्विक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासत विशिष्ट एवं विलक्षण हैं।